दैनिक जागरण

जो खुद सोचना जानते हैं, उन्हें किसी शिक्षक की जरूरत नहीं

अदालत में अनुच्छेद 370

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के फैसले के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को चार सप्ताह में जवाब देने का निर्देश देकर यही संकेत दिया कि राष्ट्रीय महत्व के इस मामले में वह तुरत-फुरत कोई फैसला करने नहीं जा रहा है। हालांकि याचिका दायर करने वालों ने केंद्र सरकार को जवाब देने के लिए चार सप्ताह का समय दिए जाने का विरोध किया, लेकिन वे इसकी अनदेखी कर गए कि अनुच्छेद 370 हटाने के खिलाफ करीब एक दर्जन याचिकाएं दायर की गई हैं और उनके जवाब तैयार करना आसान काम नहीं। इनमें कुछ याचिकाएं ऐसे लोगों की ओर से भी दायर की गई हैं जिनका काम ही है किसी न किसी मसले को लेकर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना। सुप्रीम कोर्ट को इस याचिकाबाजी के खिलाफ कुछ कदम उठाने की जरूरत है। पता नहीं ऐसा कब होगा, लेकिन अनुच्छेद 370 हटाने के खिलाफ दायर याचिकाओं पर 14 नवंबर से सुनवाई शुरू होने का मतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने इस आपत्ति पर ध्यान देना जरूरी नहीं समझा कि तब तक तो जम्मू-कश्मीर और लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश के रूप में अस्तित्व में आ जाएंगे। ज्ञात हो कि केंद्र सरकार ने इसके लिए 31 अक्टूबर की तिथि तय कर रखी है। स्पष्ट है कि सुप्रीम कोर्ट इस प्रक्रिया को रोकना आवश्यक नहीं समझ रहा है।

सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी भी उल्लेखनीय है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और देश की सुरक्षा में संतुलन जरूरी है। इसमें संदेह नहीं कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, लेकिन इस हद तक नहीं कि देश की सुरक्षा की अनदेखी कर दी जाए। इससे इन्कार नहीं कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद घाटी में कुछ प्रतिबंध लगाए गए हैं, लेकिन इसका मकसद लोगों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन करना नहीं, बल्कि शांति एवं व्यवस्था सुनिश्चित करना है। इसे सुनिश्चित करने में इसीलिए बाधाएं आ रही हैं, क्योंकि कुछ लोग अराजकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे तत्वों पर लगाम लगाना शासन का दायित्व है। इसी तरह उन तत्वों पर भी लगाम लगाना आवश्यक है जो न केवल अलगाववादियों और आतंकवादियों की भाषा बोलने में लगे हुए हैं, बल्कि उनके हितैषी भी बने हुए हैं। यह विडंबना ही है कि यही लोग संविधान और मानवाधिकारों की दुहाई देने में लगे हुए हैं। ऐसे लोगों को बेनकाब करने और साथ ही उन पर अंकुश लगाने के ठोस उपाय किए जाने चाहिए। निःसंदेह ऐसा करते हुए यह भी देखा जाना चाहिए कि कश्मीर के उन इलाकों में सामान्य स्थिति कैसे बहाल हो जहां अराजक तत्व सक्रिय हैं। बेहतर हो कि केंद्र सरकार 14 नवंबर तक यह काम कर ले।

सबक की जरूरत

उत्तराखंड से मानसून अब विदाई की दहलीज पर है। बावजूद इसके सितंबर में मौसम के तेवर अभी तक तल्ख बने हुए हैं। आमतौर पर उत्तराखंड में इन दिनों मौसम सुहावना रहता है, लेकिन इस बार लगातार हो रही बारिश से जनजीवन प्रभावित है। विशेषकर भूस्खलन से सड़कें बार-बार बाधित हो रही हैं। इतना ही नहीं, उत्तरकाशी में आपदा के दौरान कई लोग जान गंवा चुके हैं तो पिछले दिनों देवप्रयाग के पास मलबे की चपेट में आकर छह तीर्थयात्रियों की मौत हो गई। इसमें कोई दो राय नहीं कि कुदरत पर किसी का वश नहीं है, लेकिन एहतियात बरत कर नुकसान को कम किया जा सकता है। हैरत यह है कि बरसात के मौसम में हर साल यही हाल रहता है, बावजूद इसके हालात को लेकर गंभीर पहल का अभाव ही नजर आता है। दरअसल, जरूरत कुदरत के संकेतों को समझने की है। प्रकृति के अपने तौर-तरीके हैं, उनमें हम परिवर्तन नहीं कर सकते, लेकिन आने वाले समय की आहट को तो महसूस किया जा सकता है। इसके लिए जरूरत है अग्रिम तैयारियों की। यूं तो अधिकारी मानसून से पहले भी तैयारियों के दावे कर रहे थे, लेकिन अब दावों की असलियत सामने है। पौड़ी से पिथौरागढ़ और रुद्रप्रयाग, चमोली से बागेश्वर तक हर जगह मौसम के असर को महसूस किया गया। आपदा प्रबंधन के नाम पर प्रदेश में पैसा भले ही खर्च हो रहा हो, लेकिन प्रदेश को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा। मसलन सड़कों की स्थिति को ही लें, पहाड़ी क्षेत्रों से गुजरने वाले हाईवे पर भूस्खलन जोन चिन्हित भले ही कर लिए गए हों, मगर ट्रीटमेंट को लेकर स्थिति साफ नहीं है। बदरीनाथ हाईवे पर लामबगड़ भूस्खलन जोन वर्षों से मुसीबत का सबब बना हुआ है, यही हाल यमुनोत्री हाईवे पर भी है। समय बीतने के बावजूद इनका स्थाई उपचार नहीं हो पाया। चुनौती इतनी ही नहीं हैं, अब सर्दी का मौसम भी परीक्षा लेने वाला साबित हो सकता है। यदि हिमपात अधिक हुआ तो देहरादून के जौनसार-बावर, उत्तरकाशी, टिहरी, पिथौरागढ़, चमोली व अल्मोड़ा जैसे जिलों के कई इलाके अलग-थलग पड़ सकते हैं। इसके लिए आवश्यक यह है कि सरकार, शासन और प्रशासन पहले से ही ऐसी तैयारी कर ले कि इन इलाकों में रहने वाले लोगों को परेशानियों का सामना न करना पड़ा। सबसे ज्यादा जरूरी है कि वक्त रहते यहां खाद्य सामाग्री के साथ ही अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति कर ली जाए। इसके अलावा संचार साधनों को भी बेहतर करना होगा।

हम सबके प्रकाशपुंज हैं गांधी

सुधींद्र कुलकर्णी

भारतीयों के साथ पाकिस्तानियों को भी यह समझने की आवश्यकता है कि गांधी जी हमारे साझा मार्गदर्शक हो सकते हैं

अगस्त के पहले सप्ताह में मोदी सरकार द्वारा जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के बाद पाकिस्तान की ओर से बौखलाहट भरी प्रतिक्रिया आना स्वाभाविक थी, लेकिन एक अप्रत्याशित घटनाक्रम यह भी हुआ कि पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान महात्मा गांधी का हवाला देते नजर आ रहे हैं। चलो इसी बहाने सही, इमरान खान ने महात्मा गांधी की प्रासंगिकता को समझा। पाकिस्तान के गठन के बाद बीते 72 वर्षों में यह पहली बार है जब उसके किसी शीर्ष नेता ने इस तरह सार्वजनिक तौर पर उन आदर्श मूल्यों को याद किया जिनकी खातिर भारत के राष्ट्रपिता ने अपना जीवन कुर्बान कर दिया था। ये आदर्श मूल्य थे- हिंदू-मुस्लिम सौहार्द और भारत-पाक के मध्य सहज संबंध। मैं इसे दोनों देशों के ऊपर मंडराते दुश्मनी के काले बादलों के बीच रोशनी की एक किरण की तरह देखता हूं।

हम उम्मीद करते हैं कि पाकिस्तान की सेना, सरकार, बुद्धिजीवी वर्ग और मजहबी तंत्र भारत के स्वाधीनता संग्राम और उसमें महात्मा गांधी की केंद्रीय भूमिका के प्रति अपनी समझ को नए सिरे से तय करने के साथ-साथ जिन्ना और मुस्लिम लीग द्वारा समर्थित टू नेशन थ्योरी यानी द्विराष्ट्र सिद्धांत की गंभीर खामियों को भी देखें, क्योंकि इसी आधार पर पाकिस्तान बना था। कश्मीर समस्या भी एक बड़ी हद तक मुस्लिम लीग की इसी अति-विकृत सोच का नतीजा है कि मुस्लिम और हिंदू दो अलग देश हैं। इसीलिए उसने भारत के मुस्लिमों के लिए एक स्वतंत्र एवं संप्रभु राज्य की मांग को जायज ठहराया। यदि पाकिस्तान अपने खराब इतिहास का पूरी ईमानदारी से पुनरावलोकन करता तो वह यकीनन महात्मा गांधी के दर्शन और आचार-विचार में अनेक खूबियां देख पाता। हां, हम भारतीयों को भी ईमानदारी से यह देखने की जरूरत है कि क्या हम अपने देश के भीतर हिंदू-मुस्लिम सौहार्द कायम करने, जातीय एवं लैंगिक विभेद मिटाने, एक समतावादी और सतत सामाजिक-आर्थिक विकास का मॉडल विकसित करने से लेकर विभिन्न गतिविधियों में सत्य और अहिंसा के गांधीवादी पथ पर डटे हैं?

हालांकि जरूरी नहीं कि गांधीजी के हर कार्य और विचार से हम सहमत ही हों, लेकिन यदि हम ईमानदारी से दोनों देशों के मध्य शांति और मेल-मिलाप चाहते हैं तो इसके लिए गांधीजी हमारे साझा प्रकाशपुंज, प्रेरणा और मार्गदर्शक हो सकते हैं। गांधीजी के व्यक्तित्व और राजनीति को मोटे तौर पर पाकिस्तान में गलत ढंग से पेश किया गया है। पाकिस्तानियों के मन में गांधी को लेकर दो काफी गलत धारणाएं हैं। पहली, उन्हें एक हिंदू पार्टी (कांग्रेस) के ऐसे हिंदू नेता की तरह देखा जाता है जो अंग्रेजों के जाने के बाद हिंदू राज स्थापित करना चाहते थे। यह सर्वथा गलत है। जैसा कि इमरान खान द्वारा महात्मा गांधी का आदरभाव से जिक्र करने से लगता भी है कि वह (और कांग्रेस पार्टी भी)

अवधेश राजपूत

हिंदू-मुस्लिम एकता की नींव पर खड़े सेक्युलर भारत के पक्षधर थे। गांधी का हिंदुत्व सहिष्णु, समावेशी, उदार और दूसरों की आस्थाओं का सम्मान करने वाला था। वास्तव में इस उपमहाद्वीप या पूरी दुनिया के इतिहास में किसी और नेता ने गांधीजी की तरह अंतर-धार्मिक सौहार्द को अपने राजनीतिक संघर्ष का केंद्रीय एजेंडा नहीं बनाया।

दूसरी गलत धारणा, जिसने गांधीजी के बारे में पाकिस्तानियों को निष्पक्ष धारणा बनाने से रोका, यह है कि गांधी यह नहीं चाहते थे कि पाकिस्तान के रूप में एक अलग मुल्क बने। पाकिस्तानियों को पता होना चाहिए कि आखिर क्यों गांधीजी ने टू नेशन थ्योरी के आधार पर इसका विरोध किया था? भीखू पारेख ने अपनी किताब गांधीज पॉलिटिकल फिलॉस्फीः ए क्रिटिकल एग्जामिनेशन में इसे बेहतर ढंग से समझाया है। उन्होनें लिखा है कि गांधी ने भारत को भौगोलिक नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के लिहाज से परिभाषित किया और वह इसकी भौगोलिक सीमाओं के बजाय मानव-सभ्यता को अखंड रखने को लेकर अधिक फिक्रमंद थे। उनके लिए भारतीय सभ्यता विविधता और मत-भिन्नता के प्रति न सिर्फ सहिष्णु बल्कि उसका सम्मान करने वाली भी थी। अपनी तमाम कमियों और कभी-कभार होने वाले झगड़ों के साथ भारत एक खुशहाल परिवार था। चूंकि गांधी के लिए भारत के बारे में यही सत्य था, इसलिए उसका विभाजन एक झूठ था। यद्यपि वह टू नेशन थ्योरी के विरोधी थे, लेकिन भारतीयों और पाकिस्तानियों, दोनों को यह जानना चाहिए कि गांधी जी टू स्टेट थ्योरी पर सहमत थे यानी पाकिस्तान समानता के आधार पर भारत से परिसंघीय जुड़ाव के साथ एक अलग स्टेट बन सकता था।

इसके बारे में उनके और जिन्ना के मध्य हुए पत्राचार से भी पता चलता है। 11 सितंबर 1944 को गांधीजी ने जिन्ना को लिखा, हिंदू-मुस्लिम एकता मेरे जीवन का ध्येय रहा है, लेकिन इसे विदेशी ताकतों को खदेड़े बगैर हासिल नहीं किया जा सकता। इससे अप्रभावित जिन्ना ने जवाब में लिखा, भारत की समस्या का एक ही समाधान है कि पाकिस्तान और हिंदुस्तान के रूप में इसके विभाजन को स्वीकार कर लिया जाए। गांधीजी अलग राष्ट्र की धारणा से सहमत नहीं थे। लिहाजा उन्होंने निराश होकर जिन्ना को लिखा, आप यह तो मानेंगे कि (लाहौर) संकल्प में भी टू नेशन थ्योरी का कोई जिक्र नहीं था। मुझे इतिहास में ऐसी कोई मिसाल नजर नहीं आती जहां पर कोई धर्मांतरित निकाय और उसके वंशज अपनी पितृ इकाई से जुदा होकर एक अलग राष्ट्र बनने का दावा करें। यदि भारत इस्लाम के प्रादुर्भाव से पहले एक राष्ट्र था तो इसे अब भी वैसा ही रहना चाहिए, भले ही उसके बच्चों के एक बड़े वर्ग की आस्थाएं बदल गई हों।

गांधीजी ने देश के उत्तर-पश्चिमी एवं पूर्वी मुस्लिम-बहुल इलाकों में स्व-निर्णय के आधार संप्रभु राज्यों के निर्माण की बात कही थी। उन्होंने जिन्ना से कहा, यदि आप इन्हें पाकिस्तान कहना चाहें तो कह सकते हैं। उन्होंने इस सीमा तक लाहौर-संकल्प को स्वीकार किया था। उन्होंने कहा, मैं एक रास्ता सुझाता हूं। यदि विभाजन होना ही है, तो वैसा हो, जैसा दो भाइयों के बीच होता है।

आज भारत और पाकिस्तान के बीच अमन और सद्भावना की उम्मीद तभी साकार हो सकती है जब दोनों देशों के लोग और सत्ता-तंत्र गांधीजी के मूल सिद्धांतों और दृष्टिकोण को वास्तविक रूप में अंगीकार करें। अपनी हत्या से कुछ दिनों पहले गांधीजी ने घोषणा की थी, भारत और पाकिस्तान, दोनों मेरे मुल्क हैं। मैं पाकिस्तान जाने के लिए पासपोर्ट लेने वाला नहीं हूं। भले ही भौगोलिक और राजनीतिक रूप से भारत दो भागों में बंट गया हो, लेकिन दिल से तो हम आपस में दोस्त और भाई बने रहें, जो एक-दूसरे की मदद करें और सम्मान करें और बाहरी दुनिया के लिए हम एक हों।

(स्तंभकार 'म्यूजिक ऑफ द स्पिनिंग व्हील्सः महात्मा गांधीज मैनिफेस्टो फॉर द इंटरनेट एज' पुस्तक के लेखक हैं)

response@jagran.com

बापू की विरासत सहेजने की जरूरत

गिरीश्वर मिश्र

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने गांधी को उनके पुतले में कैद कर दिया और वक्त के साथ उनके विचार भूलते गए

महात्मा गांधी चमत्कारिक व्यक्तित्व के स्वामी हैं जो अतिसाधारण भी हैं, संत भी, राजनेता भी और इन सबसे अलग अपने ही ढंग के निराले क्रांतिकारी भी। सब एक साथ। उन्होने लंदन में वकालत पढ़ी और पाश्चात्य शिक्षा का अनुभव किया। फिर दक्षिण अफ्रीका में नौकरी शुरू की और वहां वर्षों रहे भी। इन सब विदेशी अनुभवों से उनकी भारतीयता की अवधारणा परिष्कृत हुई और भारत के लिए प्रीति और प्रगाढ़ हुई। दक्षिण अफ्रीका में भयंकर भेदभाव का विकट अनुभव उनके जीवन में एक मोड़ साबित हुआ। नस्ली भेद और पूर्वाग्रह के साथ अंग्रेजी राज के अत्याचारों को उन्होने निकट से देखा। वहां की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति से गांधीजी ने बहुत कुछ सीखा। इससे ही एक दृढ़ मन और लोक की चिंता को समर्पित नए गांधी-बापू का उदय हुआ और इसी कारण वह राष्ट्रपिता कहलाए। उन्होंने दमन का विरोध अहिंसा के नायाब तरीके से करने का निश्चय किया। यह बदलाव उनके व्यक्तित्व का स्थाई अंग बन गया। आगे चलकर उन्होंने इसी के साथ भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई भी लड़ी। विश्व युद्ध की विभीषिका के दौरान घनी आबादी वाले देश में अहिंसक क्रांति की ज्योति जलाने वाले मोहनदास करमचंद गांधी ने जो अनोखी शुरुआत की उससे कोई भी अछूता नहीं रह सका।

दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के बाद उन्होंने देश के जीवन और समाज को जाना। चंपारण में नील किसानों के हक की लड़ाई के बाद उनके सार्वजनिक जीवन ने एक नया रूप लिया। गांधीजी ने अभय और साहस के साथ जिस मानव धर्म को अपना लक्ष्य और आधार बनाया वह भारतीय संस्कृति के अनुसार निर्मित हुआ था और उसे ही उन्होंने जिया। वह स्वयं को स्पष्टतः हिंदू कहते थे, परंतु उनकी धर्म-दृष्टि सर्वव्यापी थी। उनके हिसाब से धर्म का तत्व हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सबमें व्याप्त है। उनके अनुसार धर्म जीवन का नियम है। गांधीजी की यह सोच कई धर्म परंपराओं के अवगाहन से बनी थी। उन्होंने बाइबिल इंग्लैंड में पढ़ी। घृणा के विरुद्ध प्रेम का ईसा का संदेश उनके मन को छू गया। धर्मभीरू मां के साथ शुरू हुए शाकाहार, आत्मशुद्धि के लिए उपवास, पारस्परिक सहिष्णुता और सद्भाव, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि के व्रत गांधीजी के जीवन में सदा बने रहे। गांधीजी हिंदू विश्वासों को अन्य धर्मों के सार्वभौम विचारों के लिए सेतु मानते थे। वह हर अच्छे विचार के लिए प्रस्तुत रहते थे, पर अपने विवेक की शर्त पर। गांधीजी ने टाल्सटॉय की पुस्तक 'दि किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू', रस्किन की 'अन टु द लास्ट' और गीता एवं रामचरितमानस के साथ नरसी मेहता जैसे भक्त कवियों की रचनाओं का विशेष आभार स्वीकारा है।

गांधीजी के व्यक्तित्व की रचना अनेक प्रभावों को आत्मसात करने से हुई। सारे प्रभावों से अविचल उनका एक व्यापक भारत-भाव था जो यहां के समाज और संस्कृति के साथ गहनता से जुड़ा था। उनकी भारतीय समाज और उसके मानस की पकड़ कोरी भावुकता वाली न होकर जमीनी हकीकत पर टिकी थी। उन्होंने देखा कि गांव जो आत्मनिर्भर थे, अंग्रेजी राज में विदेशी वस्तुओं और सेवाओं के मोहताज होते गए। गांधीजी ने यह भी देखा कि शारीरिक श्रम की कैसे उपेक्षा हो रही है और उसके सहारे नया नजरिया बन रहा है। अंग्रेजी शिक्षा आने के साथ शिक्षा की प्रक्रिया शारीरिक, नैतिक और चारित्रिक पक्ष से दूर हटती गई। ऐसे में गांधी जी ने सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक परिस्थितियों का जमीनी आकलन किया और शारीरिक एवं बौद्धिक, दोनों पक्षों के समुचित समन्वय पर ध्यान दिया। अपने विचारों को व्यावहारिक धरातल पर परखने यानी सत्य का प्रयोग करने का जो सिलसिला गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में शुरू किया, वह जीवन भर चलता रहा। सत्याग्रह गांधीजी की अपनी खोज थी। अपमान, पीड़ा, दुख-दर्द को सहते हुए भी देश ने उनके प्रखर नेतृत्व में साम्राज्यवादी ताकत के विरुद्ध अहिंसक युद्ध लड़ा। इस युद्ध में गांधीजी न तो कभी अपने मार्ग से विचलित हुए और न ही अपना धैर्य खोया। उनके नेतृत्व में परिस्थितियां बदलीं। उन्होंने मानव धर्म की परिधि में जो पहल की उसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। 1930 का नमक सत्याग्रह तो अद्भुत था। गांधी जी का विचार था कि उनके विरोध का लक्ष्य अंग्रेजों का अपमान न होकर उनके मन को बदलने और नई समझ पैदा करना था। सविनय अवज्ञा वह स्थिति है जो सामने वाले को विचार करने के लिए बाध्य करती है। इसके विपरीत हिंसा के नकारात्मक परिणाम होते हैं। गांधीजी ने मानव मन को बदलने का जो प्रयोग शुरू किया वह विस्तृत होता गया। अंग्रेजों भारत छोड़ो का आंदोलन उसका चरमोत्कर्ष बना।

गांधीजी मनुष्य को ईश्वर का अवतार या अंश मानते थे और आत्मनियंत्रण को ही व्यक्ति और समाज, दोनों के लिए विकास के मार्ग के रूप में पहचानते थे। गांव और गरीब सदैव उनके केंद्र में रहे। उन्होंने अस्पृश्यता से लोहा लिया और निम्न जातियों की स्थिति को देखते हुए ' हरिजन 'या ईश्वर के लोग कहा। वह हर व्यक्ति को सामूहिक दायित्व का हिस्सेदार बनाते थे। उन्होंने सदैव मानवता के सकारात्मक पक्ष को प्रस्तुत किया और प्रार्थना, अहिंसा और संवाद को मानव संबंधों का आधार बनाया। मानव जीवन की एकात्मता में उनका दृढ़ विश्वास था। उन्होने 'स्वराज','स्वदेशी' और 'सर्वोदय' के माध्यम से एक धर्म केंद्रित समाज की परिकल्पना की थी और एक स्वावलंबी भारतीय समाज तथा स्वायत्त, किंतु विकेंद्रीकृत भारत का सपना देखा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने गांधीजी को उनके पुतले में कैद कर दिया और उनके विचार, विश्वास और कर्म की राह को भूलते गए। वह पूजा की वस्तु हो गए और एक तरह से जीवन से अलग कर दिए गए। उनके विचार बीज हमारे अचेतन में पड़े हैं। वह हमारी विरासत हैं और उसे संभालना अपने हित के लिए जरूरी है। स्वच्छता की ओर देश का बढ़ता कदम उनके विचारों का पल्लवन है, लेकिन जिस समर्थ भारत की परिकल्पना हम कर रहे हैं उसके लिए गांधी की झोली में बहुत कुछ शेष है। यह झोली हमारे करीब है और उस तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।

(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि के कुलपति रहे हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

संस्कारवान जीवन

पश्चिमी देशों की हवा इन दिनों भारत में भी काफी तेजी से फैल रही है। पश्चिमी देशों में पति-पत्नी कब तक एक साथ जीवन व्यतीत करेंगे, इसकी कोई गारंटी नहीं होती है। ऐसी स्थिति में माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी की बात ही करना बेमानी है। पश्चिम की यह हवा तेजी से भारत में भी फैल रही है। भारतीय रीति-रिवाज और सात-फेरों के बावजूद परिवार बिखर रहे हैं। कभी पति-पत्नी में मनमुटाव तथा लड़ाई-झगड़े की बातें आती हैं तो कभी पूरे परिवार में ही लगातार लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं जो जीवन भर कटुता दे जाते हैं।

पहले दादा-दादी, भाई-बहन, चाचा-चाची सब एक साथ रहते थे। एक साथ सबका खाना-पीना होता था। इसे विद्वान रसोई को रस-वर्षा का केंद्र मानते थे, क्योंकि इसमें परिवार के कई सदस्य लगकर भोजन बनाते थे। वैसे भी जिस रसोई में जितने अधिक लोगों का भोजन बनता है, वह रसोई न होकर भंडारा माना जाता था, लेकिन नए दौर में परिवारों में संकुचित दृष्टि देखी जा रही है। इन सब कारणों से परिवार में झगड़े बढ़ रहे हैं जिसका असर परिवार के छोटे बच्चों पर पड़ रहा है। बड़े होकर वे भी वही करते हैं जो बचपन में देखे-सुने रहते हैं। विकास के युग में व्यक्ति जितना लड़ाई में समय गंवाएगा, वह आर्थिक दृष्टि से पिछड़ता जाएगा। लड़ाई-झगड़े से दोनों पक्षों को नुकसान होता है। सहनशीलता की कमी से भारतीय समाज खासकर पढ़े-लिखे परिवारों में भी यह सब स्थिति देखी जाती है।

अतः जरूरत है कि परिवार में माता-पिता अपनी संतानों को संस्कारवान बनाएं। बहुत छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि वही छोटी-छोटी बातें एक समय बड़ी बन जाती हैं। माता-पिता खुद संस्कारवान बनें तो बच्चों में भी संस्कार अच्छे होंगे और उनका जीवन सुखमय होगा। इसके लिए परिवार के बड़े और जिम्मेदार सदस्य सिर्फ अपने ही आनंद में जीवन न व्यतीत करें, बल्कि वे परिवार में समय दें। आपसी संवाद बनाएं। संवादहीनता से दूरियां बढ़ती हैं जो किसी भी हालत में उचित नहीं।

सलिल पांडेय

साठ साल का दूरदर्शन

पीयूष द्विवेदी

दूरदर्शन अगर वर्तमान समय के अनुरूप कार्यक्रम लाए तो इस प्रतिस्पर्धात्मक समय में भी अपना एक दर्शकवर्ग तैयार कर सकता है

15 सितंबर, 1959 को शुरू हुए दूरदर्शन ने बीते 15 सितंबर को अपने साठ साल पूरे कर लिए। दूरदर्शन की यह छह दशकीय यात्रा भारत में टेलीविजन की यात्रा भी है। दूरदर्शन के बीते दौर पर नजर डालें तो आजकल जितनी भी विधाओं के कार्यक्रम अलग-अलग चैनलों पर प्रसारित होते हैं, उनमें से अधिकांश विधाओं के कार्यक्रमों की शुरुआत दूरदर्शन ने की थी। रामायण, महाभारत और कृष्णा दूरदर्शन के इन तीन धार्मिक धारावाहिकों की लोकप्रियता और इनसे लोगों के आत्मीय जुड़ाव का अनुमान इतने से ही लगा सकते हैं कि राम-सीता के रूप में अरुण गोविल और दीपिका तो कृष्ण के रूप में नीतीश भारद्वाज लोगों के मन में आजतक बसे हुए हैं। बाद में अन्य चैनल आने के बाद उनपर भी रामायण, महाभारत और कृष्ण लीला के अनेक धारावाहिक आए, लेकिन जो असर दूरदर्शन के इन धारावाहिकों का था, वैसा असर कोई नहीं छोड़ पाया।

इसी तरह फौजी, बुनियाद, हम लोग, चंद्रकांता, आलिफ लैला, चाणक्य, वागले की दुनिया, मुंगेरीलाल के हसीन सपने, श्रीमान श्रीमती, ये जो है जिंदगी, सुराग, व्योमकेश बख्शी, आपबीती, शक्तिमान, जासूस विजय जैसे विविध विधाओं के अनेक कार्यक्रम हैं, जिन्होंने बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक को दूरदर्शन का दीवाना बना दिया था। शक्तिमान के रूप में भारत को उसका पहला सुपरहीरो देने का श्रेय भी दूरदर्शन को ही जाता है। इनके कामयाब होने के पीछे प्रमुख कारण था कि इनमें से तमाम धारावाहिकों की पटकथा और संवाद उस दौर के बड़े लेखकों ने लिखे थे। जैसे कि दूरदर्शन के लिए बुनियाद, हम लोग, मुंगेरीलाल के हसीन सपने जैसे धारावाहिक मशहूर लेखक मनोहर श्याम जोशी ने लिखे थे, तो वहीं महाभारत की पटकथा और संवाद राही मासूम रजा की कलम से निकलकर लोकप्रिय हो गए। इसके अलावा इन धारावाहिकों की लोकप्रियता का एक कारण इनकी एकदम यथार्थपरक प्रस्तुति भी थी, जिससे लोगों का इनसे सहज जुड़ाव हो जाता था।

सवाल ये उठता है कि जिस दूरदर्शन का इतना बड़ा और पक्का दर्शकवर्ग था, उसकी लोकप्रियता समय के साथ सिकुड़ती क्यों गई? इसका एक कारण यह रहा कि समय के साथ दूरदर्शन पर पुराने कार्यक्रम बंद हो गए और उनकी जगह उस स्तर के नए कार्यक्रम आए नहीं। उसके पास नए कार्यक्रम काफी कम हैं और ज्यादातर वक्त उस पर पुराने 'डेली शॉप' कार्यक्रमों का ही पुनः प्रसारण किया जा रहा है। सवाल है कि क्या इन पुराने कार्यक्रमों के भरोसे दूरदर्शन नए भारत का चेहरा बन सकता है?

वर्तमान समय में चैनलों और कार्यक्रमों की भरमार है, जिसने प्रतिस्पर्धा का वातावरण पैदा कर दिया है। दूरदर्शन इस प्रतिस्पर्धा में पिछड़ नहीं रहा, बल्कि भाग लेने से बच रहा है जो कि ठीक नहीं है। दूरदर्शन अगर वर्तमान समय के अनुरूप किंतु अपनी मौलिकता और पुरानी गुणवत्ता के साथ कार्यक्रम लाए और उनका सही प्रचार-प्रसार करे तो इस कठिन प्रतिस्पर्धात्मक समय में भी वह अपना एक दर्शकवर्ग तैयार कर सकता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

गांधी की राह पर चलने में स्वार्थ बाधा

गांधी के स्मरण का सही तरीका शीर्षक से लिखे अपने लेख में हृदयनारायण दीक्षित ने महात्मा गांधी के बताए रास्तों पर चलने की सलाह दी है। वैसे तो सार्वजनिक स्तर हम सब उनके बताए रास्तों पर चलने और उनकी कही बातों को मानने का संकल्प लेते हैं, लेकिन जहां बात व्यक्तिगत स्तर पर आती है, वहीं हम पीछे हट जाते हैं। चाहे बात सच्चाई की हो, अहिंसा की हो या साफ-सफाई की। पर्यावरण, जीवनशैली, समानता आदि मामलों में उनकी कही बातें आज अक्षरशः सही साबित हो रही हैं। गांधी जी दो तरह की सफाई के हिमायती थे। बाहरी और आंतरिक। आज बाहरी साफ-सफाई पर सब कोई जोर दे रहा है, लेकिन आंतरिक स्वच्छता की बात कोई नहीं कर रहा। जब तक देश का हर नागरिक आंतरिक सफाई पर ध्यान नहीं देगा, तब तक देश विभिन्न समस्याओं के मकड़जाल से कभी मुक्त नहीं हो सकता। महात्मा गांधी ने बिना किसी स्वार्थ के देश को आजाद करवाने के लिए अंग्रेजों की कई यातनाएं सही थीं, लेकिन आज बहुत से लोग अपने स्वार्थ के लिए राजनीति में आ रहे हैं। आज देश को चलाने के लिए गांधी जैसे नेता की जरूरत है। जो सिर्फ देश के बारे में बिना किसी स्वार्थ के सोचे। अगर आज लोग गांधी जी के विचारों को अपना लें तो देश में बढ़ते गलत कामों पर लगाम लग सकती है, लेकिन अफसोस कि आज अधिकांश लोगों की बुद्धि बहुत दूषित हो चुकी है ।

raju09023693142@gmail.com

अहिंसा के पुजारी को नमन

गांधी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि एक विचारधारा का नाम है। देश को आजाद कराने के लिए एक अभिमन्यु की नहीं, बल्कि भिन्न-भिन्न मानसिकता वाले अनेक अभिमन्यु की आवश्यकता थी। गांधी ने समाज के बड़े वर्ग की मानसिकता का अध्ययन किया और उसे स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बनाने के लिए अपने दर्शन की नींव रखी। उन्होंने देखा कि समाज का एक बड़ा वर्ग अपने ऊपर हो रहे अत्याचार पर पलटवार नहीं कर सकता। परिवार से स्नेह करने के कारण वह हिंसक न होकर खुद को सुरक्षित रखने के लिए भीरू बन गया है। आज भी गांधी की अहिंसक विचारधारा समाज के बड़े वर्ग के मस्तिष्क में गहरी पैठ बना चुकी है। गीता दर्शन में अटूट श्रद्धा रखने वाले गांधी ने कहा था कि अपराध करने वाले से बड़ा अपराधी वह है जो अपराध सहन करता है। गांधी के अहिंसक सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। अहिंसा के पुजारी को सादर नमन।

जया शर्मा, फरीदाबाद

चरणबद्ध तरीके से हो काम

एक अक्टूबर के अंक में प्रकाशित संपादकीय प्लास्टिक विरोधी मुहिम पढ़ा। यह कहना सही है कि प्लास्टिक से बनी वस्तुओं के विकल्प रातों रात उपलब्ध नहीं कराए जा सकते। आज हमारे रसोई घर, स्नान घर, अतिथि कक्ष आदि सब प्लास्टिक से बनी वस्तुओं से भरी हुई हैं। कार, टेलीविजन, मोबाइल आदि में प्लास्टिक की बड़ी मात्रा है। दूध, घी, मिठाई की पैकिंग, ग्लास, प्लेट, चम्मच में प्लास्टिक की बहुतायत है। इन सबके विकल्प खोजने में समय लगेगा। यह कार्य चरणबद्ध तरीके से करने की आवश्यकता है। प्रथम चरण में सिंगल यूज प्लास्टिक में आने वाली वस्तुओं से आम आदमी को अवगत कराया जाए। कौन सी वस्तुएं इसके अंतर्गत आती हैं, इनके क्या नुकसान हैं, इनके लिए क्या प्रतिबंध, जुर्माना है। साथ ही इनके क्या विकल्प हो सकते हैं। ऐसा कर के ही हम गांधी जी की 150 वीं जयंती पर भारत को प्लास्टिक मुक्त देश बनाने की शुरुआत कर सकते हैं।

विनोद चतुर्वेदी, लोनी रोड, दिल्ली

पाकिस्तान से सावधान रहे भारत

दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति जब मीठा-मीठा बोलने लगे और अपने विचारों में सकारात्मकता लाने लगे तो तुरंत सावधान हो जाना चाहिए। पाकिस्तान द्वारा करतारपुर कॉरिडोर बनाना, भारत के लोगों को गुरुद्वारे के दर्शन की अनुमति देने के पीछे कोई गहरी चाल है। दुनिया की नजरों में खुद को अच्छा साबित कर इस कॉरिडोर के माध्यम से वह भारत में खलिस्तानी आतंकवादियों को भारत भेजकर अपना मकसद पूरा कर सकता है। जिससे सरकार और सिख समुदाय में खाई उत्पन्न हो जाए। कुल मिलाकर करतारपुर कॉरिडोर की आड़ में पाकिस्तान कोई घिनौनी साजिश रच रहा है।

चंद्र प्रकाश शर्मा, रानी बाग, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।